भूमिका

मानव होने की सार्थकता हमारी संवेदनशीलता में निहित है। जब समाज का एक वर्ग हमारी संवेदनहीनता के चलते बद्तर जीवन जीने को मजबूर हो तो यह हमारे मानव होने की सार्थकता पर प्रश्न-चिह्न खड़ा करता है। कई कलात्मक प्रतिभा और गुणों से पूर्ण होने के बावजूद यदि किन्नर समुदाय अपनी पहचान और विकास के लिए आज भी तरस रहा है तो इसमें सामाजिक स्वीकार्यता न मिलने की बहुत अहम् भूमिका है। व्यवस्था और समाज के पूर्वाग्रह युक्त पक्षपात-पूर्ण रवैये ने किन्नर समाज के अस्तित्व एवं उसकी अस्मिता को संकट की स्थिति में ला खड़ा किया है। हमें यह समझना होगा कि लैंगिकता का तात्पर्य मात्र नर या मादा, औरत या मर्द ही से नहीं है। हमें लोगों को लैंगिक धरातल पर उस तरीके से जीवन जीने की छूट देनी होगी, जिस तरीके से उन्हें जीवन जीने की इच्छा है। समाज सही दिशा में आगे बढ़ सके इसके लिए यह जरूरी है कि हम उनकी अस्मिता और उनके अस्तित्व को स्वीकार करें।

वास्तविकता के धरातल पर स्थित प्रदीप सौरभ की 'तीसरी ताली' अपने समकालीन उपन्यासों में विशिष्ट स्थान रखती है। इस उपन्यास की विशिष्टता ने ही मुझे शोध विषय के रूप में इसके चयन के लिए प्रेरित किया। उपन्यास का कथानक एक ओर जहां किन्नर समाज की मान्यताओं, चुनौतियों और उनसे जुड़े मिथकों को उद्घाटित करता है वहीं दूसरी ओर किन्नर विमर्श के लिए जमीन तैयार कर यह बतलाता है कि मानवाधिकार के परिप्रेक्ष्य में यह विमर्श आज के समय की आवश्यकता है। शोध पूर्ण दृष्टि से युक्त होने की वजह से यह उपन्यास ऐसे समाज के निर्माण के लिए सार्थक बहस को जन्म देता है जिसमें किन्नर समाज के अस्तित्व एवं उसकी अस्मिता के लिए पूर्णरूपेण स्थान हो, उपन्यास के अन्त में पत्रकार विजय द्वारा कहा गया यह संवाद- ''दुनिया के दंश से अपने आपको बचाने के लिए मैंने लगातार लड़ाई लड़ी और खुद को स्थापित किया। मैं नाचना-गाना नहीं, नाम कमाना चाहता था। भगवान राम

के उस मिथक को झुठलाना चाहता था, जिसके कारण तीसरी योनि के लोग नाचने-गाने के लिए अभिशप्त हैं.... परिवार और समाज से बेदखल हैं....।''[1] एक ओर जहां परिवार और समाज को आईना दिखाता है वहीं दूसरी ओर किन्नर विमर्श को मानवाधिकार के विमर्श से भी जोड़ता है।

इस लघु शोध-प्रबंध को लिखने के क्रम में मेरी निरंतर यही कोशिश रही है कि यह वस्तुनिष्ठ एवं अतिवाद मुक्त हो, प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध तीन अध्यायों में बंटा है और अंत में उपसंहार है। प्रथम अध्याय 'तृतीय लिंग की अवधारणा' है। इस अध्याय में तृतीय लिंग की अवधारणा पर विस्तार से चर्चा की गई है। भारतीय वाङमय में वर्णित अर्द्धनारीश्वर की अवधारणा से लेकर महाभारत के स्त्रैण पुरुष मिथकीय पात्र शिखंडी तक, रामायण में वर्णित किन्नर प्रसंग से लेकर समकालीन उपन्यासों में व्यक्त तृतीय लिंगी समाज के जीवन तक को इस अध्याय में एक कोलाज में समेटकर तृतीय लिंग के अवधारणात्मक स्वरूप में निरंतर आ रहे बदलावों की भी पड़ताल करने की कोशिश की गई है। सिनेमा और मीडिया में इस तृतीय लिंग समुदाय ने अपनी अभिव्यक्ति किस रूप में पाई है इसे भी मैंने प्रथम अध्याय में व्यक्त किया है।

दूसरे अध्याय में वस्तुनिष्ठ दृष्टि से उन प्रश्नों पर विचार किया गया है जो सीधे-सीधे मेरे शोध विषय से संवाद करते हैं। प्रदीप सौरभ की 'तीसरी ताली' इन प्रश्नों की वजह से ही अपने समकालीन उपन्यासों में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाती है। हालांकि इस अध्याय में उपन्यास में वर्णित विविध पहलुओं की पड़ताल की गई है परंतु ये विविध पहलू किसी न किसी बिंदु पर तृतीय लिंग समुदाय के अस्तित्व के प्रश्नों से टकराते हैं। इस अध्याय में जहां एक ओर हाशिए के समाज के विद्रुप जीवन को रेखांकित किया गया है वहीं दूसरी ओर इस

[1] सौरभ, प्रदीप. 2011. तीसरी ताली. दिल्ली. वाणी प्रकाशन. पृ.-195

जीवन को जीने के क्रम में आने-वाले आजीविका से लेकर अस्मिता तक के संघर्ष को चित्रित किया गया है।

तीसरे अध्याय में उन विमर्शों पर एक सार्थक पड़ताल की कोशिश की गई है जिसके लिए 'तीसरी ताली' जमीन तैयार करती है। तृतीय लिंग समुदाय का सेक्स रैकेट की ओर झुकाव, जिजीविषा (जीने की इच्छा) से मुमूर्षा (मरने की इच्छा) की यात्रा, अभिशप्त जीवन में व्यवस्था की भूमिका जैसे विमर्श को इस अध्याय में समेटने की कोशिश की गई है, ये विमर्श मानवाधिकार से जुड़े कई प्रश्नों को स्वर प्रदान करते हैं।

प्रबंध के अंत में 'उपसंहार' के अंतर्गत शोध का निष्कर्ष दिया गया है और उसके बाद संदर्भ में पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा सहायक कोशों की सूची दी गई है।

हालांकि मेरे इस लघु शोध-प्रबंध की अपनी सीमाएं हैं और मुझे इस सच को स्वीकार करने में कोई आपत्ति भी नहीं है। पंरतु शोध कार्य के क्रम में मेरी निरंतर यह कोशिश रही है कि मैं उन सीमाओं से उबर सकूं।

मैं अपने शोध-निर्देशक श्रद्धेय गुरुवर **प्रो. सूरज पालीवाल जी** का श्रद्धावनत हृदय से आभार व्यक्त करती हूं जिनके स्नेहिल, सुचिन्तित मार्गदर्शन में प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का यह स्वरूप प्राप्त हुआ। उन्होंने मुझे विषय के चयन से लेकर लघु शोध-प्रबंध पूर्ण होने तक अपने ढंग से कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी। उनके कुशल निर्देशन से मुझे निर्द्वन्द्व दृष्टि से शोध कार्य पूर्ण करने में काफी मदद मिली है।

मैं साहित्य विभाग के शिक्षक प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. बीर पाल सिंह यादव एवं डॉ. रुपेश कुमार सिंह के प्रति आभार व्यक्त करती हूं जिनसे समय-समय पर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग मिला।

दुख की घड़ियों में सदैव संबल बनकर खड़े रहने वाले पिता श्री जयप्रकाश माता-श्रीमती कृष्णा देवी, नाना, नानी, मामाजी एवं भाई बहनों का ऋण मैं आजीवन नहीं उतार सकती अपने वर्तमान स्वरूप में यह लघु शोध-प्रबंध उनके आशीर्वाद एवं प्रेम का प्रतिफल ही मालूम पड़ता है।

इस लघु शोध-प्रबंध को लिखने के क्रम में मेरे प्रिय मित्र कुमार सौरभ ने अनेक व्यस्तताओं के मध्य समय निकालकर मेरी हर कदम पर सहायता की साथ ही शोध संबंधी विचार-विमर्श के दौरान अपनी सूझ-बूझ से मेरा मार्गदर्शन किया। इस आत्मिक सहयोग के लिए मैं अपने मित्र का हृदय से आभार व्यक्त करती हूं।

इस लघु शोध-प्रबंध को लिखने के क्रम में मैं भावनात्मक उतार-चढ़ाव के दौर से कई बार गुजरी। इस सफर में मेरी हमसफर रही अग्रज प्रियंका शर्मा दी का मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूं।

इस लघु शोध-प्रबंध के टंकण में सहायता के लिए मैं उमाशंकर अंकल को धन्यवाद ज्ञापन करती हूं।

मैं अपने अन्य अग्रज एवं मित्रों की भी आभारी हूं जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करवाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त अन्य कई और नाम भी जाने-अनजाने छूट जा रहे हैं उनके प्रति भी बहुत-बहुत आभार।

स्वाति

तीसरी ताली में अस्तित्व का संकट

एम.फिल. हिंदी साहित्य की उपाधि हेतु प्रस्तुत
लघु शोध-प्रबंध

शोधार्थी
स्वाति
पंजीयन सं.- 2015/02/215/001

शोध निर्देशक
प्रो. सूरज पालीवाल
प्रोफेसर
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र)
दिसम्बर-2016

तीसरी ताली में अस्तित्व का संकट

एम.फिल. हिंदी साहित्य की उपाधि हेतु प्रस्तुत
लघु शोध-प्रबंध

शोधार्थी
स्वाति
पंजीयन सं.- 2015/02/215/001

शोध निर्देशक
प्रो. सूरज पालीवाल
प्रोफेसर
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र)
दिसम्बर-2016